The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 10 | October 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

छत्तीसगढ़ में मराठा शक्ति का उदय एवं विस्तार: 1741 ई. में मराठा प्रवेश का ऐतिहासिक अध्ययन

राजेश कुमार चन्द्रा

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, शासकीय टीसीएल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जांजगीर, जिला- जांजगीर चांपा (छ.ग.)

डॉ. कमलेश कुमार शुक्ला

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, सी. एम. दुबे स्नातकोत्तर, महाविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.24491435

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 28-10-2026

Accepted: 09-11-2026

Published: 20-11-2026

Keywords:

मराठा शक्ति, नागपुर के भोंसले, छत्तीसगढ़, रतनपुर, भास्कर पंत, कलचुरि शासन, मराठा आधिपत्य।

ABSTRACT

प्रस्तुत प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य छत्तीसगढ़ में मराठा शक्ति के उदय, विस्तार तथा वर्ष 1741 ई. में उनके प्रवेश की ऐतिहासिक प्रक्रिया का अध्ययन करना है। अठारहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य की राजनीतिक कमजोरी के परिणामस्वरूप अनेक क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ, जिनमें मराठा शक्ति प्रमुख थी। नागपुर के भोंसले शासकों, विशेषकर रघुजी भोंसले प्रथम ने मध्य भारत में अपने राजनीतिक प्रभाव का विस्तार किया। इसी विस्तारवादी प्रक्रिया के अंतर्गत छत्तीसगढ़ मराठों के राजनीतिक एवं आर्थिक हितों का महत्त्वपूर्ण केंद्र बना। मराठों के आगमन से पूर्व छत्तीसगढ़ में रतनपुर के कलचुरि शासकों तथा विभिन्न स्थानीय शासकों, जमींदारों और सामंतों का प्रभाव विद्यमान था। वर्ष 1741 ई. में भास्कर पंत के नेतृत्व में मराठा अभियान के परिणामस्वरूप रतनपुर पर मराठा आधिपत्य स्थापित होने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। इसके पश्चात नागपुर के भोंसले शासकों ने अप्रत्यक्ष शासन व्यवस्था के माध्यम से स्थानीय प्रशासन पर नियंत्रण स्थापित किया तथा आगे चलकर रायपुर सहित अन्य क्षेत्रों में अपना प्रभाव विस्तारित किया। बिम्बाजी भोंसले के शासनकाल में प्रत्यक्ष मराठा प्रशासन का प्रभाव अधिक स्पष्ट हुआ। यह अध्ययन ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है तथा

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

इसमें प्राथमिक और द्वितीयक ऐतिहासिक स्रोतों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मराठा प्रवेश ने छत्तीसगढ़ की तत्कालीन राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए और इस क्षेत्र को मध्य भारत की व्यापक मराठा राजनीति से जोड़ दिया।

इस शोध-पत्र में छत्तीसगढ़ में मराठा शक्ति के उदय, विस्तार तथा 1741 ई. में उनके प्रवेश की ऐतिहासिक परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है। इसमें विशेष रूप से नागपुर के भोंसले शासकों की भूमिका, तत्कालीन छत्तीसगढ़ की राजनीतिक स्थिति और मराठा आधिपत्य की स्थापना की प्रक्रिया का विश्लेषण किया गया है।

1. प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ का इतिहास मध्य भारत की उन ऐतिहासिक प्रक्रियाओं से जुड़ा है, जिनमें क्षेत्रीय राजसत्ताओं, स्थानीय सामंतों तथा बाहरी राजनीतिक शक्तियों के बीच संबंध और संघर्ष दिखाई देते हैं। अठारहवीं शताब्दी में मुगल सत्ता के कमजोर होने के साथ मराठा शक्ति का विस्तार हुआ। इसी राजनीतिक परिवर्तन के अंतर्गत नागपुर के भोंसले शासकों ने छत्तीसगढ़ की ओर अपना प्रभाव बढ़ाया। वर्ष 1741 ई. में भास्कर पंत के नेतृत्व में मराठा अभियान रतनपुर पहुँचा, जिसे छत्तीसगढ़ में मराठा आधिपत्य की स्थापना की दिशा में महत्त्वपूर्ण घटना माना जाता है (Mishra, 1979; The Imperial Gazetteer of India, 1908)।

मराठों के आगमन से पहले छत्तीसगढ़ का प्रमुख भाग रतनपुर के कलचुरि शासकों के अधीन था। इसके अतिरिक्त रायपुर क्षेत्र, विभिन्न जमींदारियों तथा स्थानीय शक्तियों की अपनी राजनीतिक और प्रशासनिक भूमिका थी। अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में उत्तराधिकार संबंधी विवादों और क्षेत्रीय नियंत्रण की चुनौतियों ने बाहरी हस्तक्षेप के अवसर उत्पन्न किए। नागपुर के भोंसले शासकों के लिए छत्तीसगढ़ का महत्त्व केवल भौगोलिक विस्तार तक सीमित नहीं था; यह क्षेत्र मध्य भारत और पूर्वी भारत के बीच संपर्क तथा राजस्व की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण था (Gordon, 1993; Mishra, 1979)।

मराठा आधिपत्य की स्थापना एक ही घटना तक सीमित नहीं रही। रतनपुर में प्रारंभिक राजनीतिक हस्तक्षेप के बाद स्थानीय शासकों के माध्यम से शासन चलाने की व्यवस्था अपनाई गई। समय के साथ रायपुर सहित अन्य क्षेत्रों पर नियंत्रण बढ़ा और नागपुर भोंसले सत्ता का प्रत्यक्ष प्रभाव सुदृढ़ हुआ। इस प्रक्रिया में स्थानीय राजनीतिक शक्तियों के साथ समझौते, नियंत्रण और प्रशासनिक बदलाव शामिल थे। इसलिए मराठा प्रवेश को केवल सैन्य अभियान के रूप में नहीं, बल्कि क्षेत्रीय सत्ता-संतुलन में आए परिवर्तन के रूप में समझना आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य 1741 ई. में मराठों के प्रवेश की पृष्ठभूमि, प्रमुख घटनाओं तथा छत्तीसगढ़ में उनकी सत्ता स्थापित होने की प्रक्रिया का ऐतिहासिक विश्लेषण करना है। अध्ययन में मराठा विस्तार की व्यापक पृष्ठभूमि, तत्कालीन स्थानीय राजनीतिक संरचना और नागपुर के भोंसले शासकों की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया गया है। उपलब्ध ऐतिहासिक साहित्य और प्रकाशित विवरणों के आधार पर घटनाओं के क्रम तथा सत्ता-परिवर्तन का विवेचन किया गया है। इससे छत्तीसगढ़ के अठारहवीं शताब्दी के राजनीतिक इतिहास में मराठा हस्तक्षेप के महत्त्व को समझने में सहायता मिलती है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य छत्तीसगढ़ में मराठा शक्ति के उदय, विस्तार तथा 1741 ई. में उनके प्रवेश की ऐतिहासिक प्रक्रिया का अध्ययन करना है। इस व्यापक उद्देश्य के अंतर्गत निम्नलिखित विशिष्ट

उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं:

i) अठारहवीं शताब्दी में मराठा शक्ति के उदय एवं मध्य भारत में उसके विस्तार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
ii) नागपुर के भोंसले वंश के राजनीतिक उत्कर्ष तथा छत्तीसगढ़ की ओर उनके विस्तार के उद्देश्यों का विश्लेषण करना।
iii) मराठों के आगमन से पूर्व छत्तीसगढ़ की राजनीतिक स्थिति एवं कलचुरि शासन की संरचना का अध्ययन करना।
iv) वर्ष 1741 ई. में भास्कर पंत के नेतृत्व में हुए मराठा अभियान तथा रतनपुर पर स्थापित आधिपत्य का ऐतिहासिक विश्लेषण करना।
v) रतनपुर और रायपुर क्षेत्रों में मराठा सत्ता की स्थापना, अप्रत्यक्ष शासन तथा बाद में विकसित प्रत्यक्ष नियंत्रण की प्रक्रिया का अध्ययन करना।
vi) छत्तीसगढ़ के राजनीतिक एवं प्रशासनिक इतिहास पर मराठा प्रवेश के प्रभाव का मूल्यांकन करना।

3. अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत शोध-पत्र में छत्तीसगढ़ में मराठा शक्ति के उदय, विस्तार तथा 1741 ई. में उनके प्रवेश की ऐतिहासिक प्रक्रिया का अध्ययन करने के लिए ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति अपनाई गई है। अध्ययन का स्वरूप मुख्यतः गुणात्मक है, जिसमें उपलब्ध ऐतिहासिक तथ्यों, घटनाओं और अभिलेखीय विवरणों का विश्लेषण किया गया है। इसका उद्देश्य मराठा प्रवेश की पृष्ठभूमि, तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों तथा छत्तीसगढ़ में मराठा आधिपत्य की स्थापना की प्रक्रिया को क्रमबद्ध रूप से समझना है।

अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत तत्कालीन सरकारी अभिलेख, ऐतिहासिक दस्तावेज, राजकीय पत्राचार, सनदें तथा उपलब्ध प्रशासनिक विवरणों को महत्त्व दिया गया है। द्वितीयक स्रोतों में इतिहासकारों द्वारा लिखित पुस्तकें, शोध-पत्र, प्रकाशित ऐतिहासिक अध्ययन तथा Imperial Gazetteer of India जैसे संदर्भ ग्रंथ शामिल हैं। विशेष रूप से छत्तीसगढ़ के राजनीतिक इतिहास के अध्ययन के लिए पी. एल. मिश्रा की पुस्तक तथा मराठा इतिहास की व्यापक पृष्ठभूमि समझने के लिए स्टीवर्ट गॉर्डन के ऐतिहासिक अध्ययन का उपयोग किया गया है।

प्राप्त तथ्यों का कालक्रमानुसार वर्गीकरण एवं तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। विभिन्न स्रोतों में उल्लिखित घटनाओं, तिथियों और ऐतिहासिक विवरणों की तुलना करके उनके संदर्भ एवं विश्वसनीयता को समझने का प्रयास किया गया है। जहाँ ऐतिहासिक विवरणों में मतभेद उपलब्ध हैं, वहाँ किसी एक मत को अंतिम सत्य मानने के बजाय स्रोतों के आधार पर उनका विवेचन किया गया है। इस प्रकार अध्ययन में ऐतिहासिक व्याख्या, तथ्यात्मक परीक्षण और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को अपनाते हुए छत्तीसगढ़ में मराठा सत्ता की स्थापना का समग्र अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

4. मराठा शक्ति का उदय एवं विस्तार

अठारहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य के पतन के साथ भारतीय राजनीति में अनेक क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ। इनमें मराठा शक्ति प्रमुख थी, जिसने शिवाजी एवं पेशवाओं के नेतृत्व में अपनी राजनीतिक और सैन्य स्थिति सुदृढ़ की। इसी विस्तारवादी प्रक्रिया ने नागपुर के भोंसले शासकों के माध्यम से छत्तीसगढ़ में मराठा प्रवेश का मार्ग प्रशस्त किया।

4.1. शिवाजी एवं पेशवाओं के नेतृत्व में मराठा शक्ति का विस्तार

मराठा शक्ति के उदय में छत्रपति शिवाजी का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण था। उन्होंने सत्रहवीं शताब्दी में दक्कन क्षेत्र में स्वतंत्र मराठा राज्य की स्थापना की दिशा में संगठित प्रयास किए। शिवाजी ने अपनी सैन्य कुशलता, दुर्ग व्यवस्था और गुरिल्ला युद्ध पद्धति के माध्यम से बीजापुर तथा मुगल सत्ता को चुनौती दी। वर्ष 1674 में रायगढ़ में उनका राज्याभिषेक हुआ, जिसने मराठा राज्य की राजनीतिक स्वतंत्रता को औपचारिक स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने अष्टप्रधान परिषद के माध्यम से प्रशासनिक व्यवस्था को भी संगठित किया (Sarkar, 1920; Sardesai, 1946)।

Duff (1826) ने बताया कि मराठा सत्ता का विस्तार शिवाजी के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ और बाद में उत्तराधिकार संघर्षों तथा पेशवाओं की राजनीतिक एवं सैन्य गतिविधियों के माध्यम से मराठा शक्ति का विस्तार हुआ। Ranade (1900)

ने बताया कि मराठा शक्ति का उदय केवल सैन्य विजय का परिणाम नहीं था, बल्कि इसके पीछे महाराष्ट्र की सामाजिक चेतना, धार्मिक विचारधारा और राजनीतिक संगठन की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।

शिवाजी के बाद मराठा शक्ति के विस्तार में पेशवाओं की भूमिका निर्णायक रही। पेशवा बाजीराव प्रथम (1720–1740) के नेतृत्व में मराठा प्रभाव दक्कन से आगे मालवा, बुंदेलखंड और उत्तर भारत तक विस्तृत हुआ। मालवा में मराठा प्रभाव स्थापित होने तथा विभिन्न क्षेत्रीय मराठा सरदारों के उदय से उनकी राजनीतिक शक्ति मजबूत हुई। बाद के पेशवाओं के समय मराठा संघ का विस्तार जारी रहा, यद्यपि 1761 के पानीपत युद्ध ने उनकी उत्तर भारतीय महत्वाकांक्षाओं को गंभीर चुनौती दी। इस विस्तृत राजनीतिक पृष्ठभूमि ने नागपुर के भोंसले शासकों के लिए मध्य भारत और छत्तीसगढ़ की ओर विस्तार के अवसर उत्पन्न किए (Gordon, 1993)।

4.2. नागपुर में भोंसले वंश का उदय एवं राजनीतिक उत्कर्ष

नागपुर में भोंसले वंश का राजनीतिक उत्कर्ष मराठा शक्ति के क्षेत्रीय विस्तार की एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। इस वंश के प्रमुख शासक रघुजी भोंसले प्रथम ने अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अपनी सैन्य एवं राजनीतिक गतिविधियों के माध्यम से नागपुर को एक प्रभावशाली सत्ता केंद्र के रूप में विकसित किया। उस समय देवगढ़ के गोंड राज्य में उत्तराधिकार संबंधी विवाद और राजनीतिक अस्थिरता विद्यमान थी। रघुजी भोंसले ने इन परिस्थितियों का लाभ उठाकर देवगढ़ की राजनीति में हस्तक्षेप किया और धीरे-धीरे अपना प्रभाव स्थापित किया।

रघुजी भोंसले की शक्ति केवल नागपुर और देवगढ़ तक सीमित नहीं रही। उन्होंने पूर्वी भारत की ओर सैन्य अभियान चलाए तथा बरार, गोंडवाना और ओडिशा सहित विभिन्न क्षेत्रों में मराठा प्रभाव बढ़ाया। इन अभियानों से नागपुर भोंसले राज्य की राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई। छत्तीसगढ़ भी इसी विस्तारवादी नीति का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बना। नागपुर और छत्तीसगढ़ के बीच भौगोलिक निकटता, व्यापारिक संपर्क तथा राजस्व प्राप्ति की संभावनाओं ने भोंसले शासकों की रुचि को और बढ़ाया। इस प्रकार नागपुर में भोंसले सत्ता का उत्कर्ष छत्तीसगढ़ में मराठा प्रवेश की प्रमुख पृष्ठभूमि बना (Gordon, 1993; Mishra, 1979)।

4.3. मध्य भारत में मराठा विस्तार की प्रक्रिया

अठारहवीं शताब्दी में मराठों ने मध्य भारत में अपनी राजनीतिक एवं सैन्य शक्ति का व्यापक विस्तार किया। पेशवा बाजीराव प्रथम के नेतृत्व में मालवा और बुंदेलखंड में मराठा गतिविधियाँ तेज हुईं। मालवा में होलकर, सिंधिया और पवार जैसे मराठा सरदारों ने अपना प्रभाव स्थापित किया। इसी प्रकार बुंदेलखंड में महाराजा छत्रसाल की सहायता के लिए किए गए मराठा अभियान ने इस क्षेत्र में उनकी राजनीतिक स्थिति मजबूत की।

मध्य भारत में विस्तार के साथ मराठों की गतिविधियाँ नर्मदा घाटी, गोंडवाना और नागपुर के आसपास के क्षेत्रों तक पहुँचीं। इस प्रक्रिया में विभिन्न स्थानीय शासकों के साथ संघर्ष, समझौते और राजस्व संबंधी व्यवस्थाएँ महत्त्वपूर्ण रहीं। नागपुर के भोंसले शासकों ने पूर्वी एवं दक्षिण-पूर्वी क्षेत्रों की ओर अपने प्रभाव का विस्तार किया। छत्तीसगढ़ इस भौगोलिक और राजनीतिक विस्तार की स्वाभाविक कड़ी बना (Gordon, 1993; The Imperial Gazetteer of India, 1908)।

5. मराठों के आगमन से पूर्व छत्तीसगढ़ की राजनीतिक स्थिति

मराठों के छत्तीसगढ़ आगमन से पूर्व यह क्षेत्र मुख्यतः कलचुरि शासकों के अधीन था, जबकि विभिन्न स्थानीय शासकों, जमींदारों और सामंतों का भी राजनीतिक प्रभाव विद्यमान था। अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में क्षेत्रीय सत्ता-संघर्ष, प्रशासनिक कमजोरियों और राजनीतिक अस्थिरता ने मराठा हस्तक्षेप के लिए परिस्थितियाँ निर्मित कीं।

5.1. कलचुरि शासन एवं उसकी राजनीतिक संरचना

मराठों के छत्तीसगढ़ आगमन से पूर्व इस क्षेत्र में कलचुरि वंश का शासन प्रमुख राजनीतिक व्यवस्था के रूप में विद्यमान था। कलचुरियों की मुख्य राजधानी रतनपुर थी, जहाँ से शासक राज्य के विभिन्न भागों पर नियंत्रण रखते थे। रायपुर क्षेत्र में भी कलचुरि वंश की एक शाखा का प्रभाव रहा। इस प्रकार छत्तीसगढ़ की राजनीतिक संरचना एक ही केंद्र तक सीमित न होकर विभिन्न क्षेत्रीय सत्ता-केंद्रों में विभाजित थी।

कलचुरि शासन में राजा सर्वोच्च राजनीतिक एवं प्रशासनिक अधिकारी होता था। राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय शासकों, सामंतों और जमींदारों की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी। वे अपने क्षेत्रों में प्रशासनिक कार्यों के साथ राजस्व संग्रह तथा स्थानीय व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग करते थे। केंद्रीय सत्ता और स्थानीय शक्तियों के बीच संबंधों के आधार पर शासन संचालित होता था। अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कलचुरि सत्ता की राजनीतिक स्थिति कमजोर होने लगी थी। उत्तराधिकार संबंधी समस्याओं और क्षेत्रीय शक्तियों के प्रभाव ने केंद्रीय नियंत्रण को प्रभावित किया। इन परिस्थितियों ने मराठों के राजनीतिक हस्तक्षेप के लिए अवसर उत्पन्न किए (Mishra, 1979; The Imperial Gazetteer of India, 1908)।

5.2. स्थानीय शासक, जमींदार एवं क्षेत्रीय शक्तियाँ

कलचुरि शासन के अंतर्गत छत्तीसगढ़ की राजनीतिक व्यवस्था में स्थानीय शासकों, जमींदारों और सामंतों का विशेष महत्त्व था। राज्य के विस्तृत भूभाग में अनेक स्थानीय शक्तियाँ अपने-अपने क्षेत्रों में प्रभाव रखती थीं। ये शक्तियाँ राजस्व संग्रह, कानून-व्यवस्था तथा स्थानीय प्रशासन के संचालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। केंद्रीय शासक के प्रति उनकी निष्ठा और राजस्व संबंधी दायित्वों के आधार पर उनके राजनीतिक अधिकार निर्धारित होते थे।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों में गोंड शासकों तथा अन्य स्थानीय प्रमुखों का भी प्रभाव था। बस्तर और आसपास के क्षेत्रों में स्थानीय राजवंशों की अपनी स्वतंत्र राजनीतिक परंपराएँ विद्यमान थीं। इसी प्रकार विभिन्न जमींदारियाँ क्षेत्रीय प्रशासन और ग्रामीण जीवन को प्रभावित करती थीं। स्थानीय शक्तियों की उपस्थिति के कारण छत्तीसगढ़ की राजनीतिक संरचना बहुस्तरीय थी। जब अठारहवीं शताब्दी में मराठों ने इस क्षेत्र की ओर विस्तार किया, तब इन स्थानीय शासकों और जमींदारों के साथ समझौते, अधीनता तथा संघर्ष उनकी राजनीतिक नीति के महत्त्वपूर्ण अंग बने। अतः मराठा आधिपत्य की स्थापना को समझने के लिए तत्कालीन क्षेत्रीय शक्तियों की भूमिका का अध्ययन आवश्यक है (Mishra, 1979; Shukla, 1985)।

6. छत्तीसगढ़ में मराठा अभियानों की पृष्ठभूमि एवं प्रवेश

अठारहवीं शताब्दी में नागपुर के भोंसले शासकों ने अपने राज्य के विस्तार और आर्थिक-सामरिक हितों को ध्यान में रखते हुए छत्तीसगढ़ की ओर ध्यान केंद्रित किया। तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का लाभ उठाकर मराठों ने इस क्षेत्र में अभियान चलाए, जिसके परिणामस्वरूप 1741 ई. में भास्कर पंत के नेतृत्व में रतनपुर पर मराठा आधिपत्य स्थापित होने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई।

6.1. मराठा विस्तार के राजनीतिक एवं आर्थिक उद्देश्य

छत्तीसगढ़ की ओर मराठा विस्तार के पीछे राजनीतिक और आर्थिक दोनों प्रकार के उद्देश्य कार्यरत थे। नागपुर के भोंसले शासक अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार करके मध्य भारत में अपनी सत्ता को मजबूत करना चाहते थे। छत्तीसगढ़ की भौगोलिक स्थिति नागपुर और पूर्वी भारत के बीच संपर्क की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण थी। इस क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित करने से मराठों को अपने राजनीतिक प्रभाव का विस्तार करने तथा स्थानीय शासकों पर प्रभुत्व स्थापित करने का अवसर प्राप्त हो सकता था।

आर्थिक दृष्टि से छत्तीसगढ़ कृषि उत्पादन, भूमि-राजस्व और क्षेत्रीय व्यापार के कारण महत्त्वपूर्ण था। यहाँ से नियमित राजस्व प्राप्त करना भोंसले राज्य की आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकता था। इस प्रकार छत्तीसगढ़ पर नियंत्रण मराठों के लिए क्षेत्रीय विस्तार के साथ-साथ आर्थिक संसाधनों और सामरिक मार्गों पर प्रभाव स्थापित करने का माध्यम भी था (Gordon, 1993; Mishra, 1979)।

6.2. भास्कर पंत का रतनपुर अभियान (1741 ई.)

छत्तीसगढ़ में मराठा प्रवेश की प्रक्रिया में भास्कर पंत का रतनपुर अभियान एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। उस समय रतनपुर में कलचुरि शासक रघुनाथ सिंह का शासन था। कलचुरि सत्ता की राजनीतिक स्थिति कमजोर हो रही थी और क्षेत्रीय नियंत्रण की चुनौतियाँ बढ़ रही थीं। नागपुर के भोंसले शासकों ने इन परिस्थितियों का लाभ उठाकर छत्तीसगढ़

में अपना प्रभाव स्थापित करने का प्रयास किया। इसी उद्देश्य से भास्कर पंत के नेतृत्व में मराठा सेना ने वर्ष 1741 ई. में रतनपुर की ओर अभियान किया।

इस अभियान के दौरान मराठा सेना ने रतनपुर पर दबाव बनाया और अंततः वहाँ के कलचुरि शासक को मराठा आधिपत्य स्वीकार करना पड़ा। इस घटना ने छत्तीसगढ़ की तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन की शुरुआत की। रतनपुर पर मराठा प्रभाव स्थापित होने के बाद नागपुर के भोंसले शासकों के लिए इस क्षेत्र में आगे राजनीतिक हस्तक्षेप करना आसान हुआ। इस प्रकार भास्कर पंत का अभियान केवल एक सैन्य कार्रवाई नहीं था, बल्कि छत्तीसगढ़ में कलचुरि सत्ता के कमजोर पड़ने और मराठा प्रभुत्व के आरंभ का महत्त्वपूर्ण चरण था (Mishra, 1979; The Imperial Gazetteer of India, 1908)।

6.3. रतनपुर पर मराठा आधिपत्य की स्थापना

वर्ष 1741 ई. में रतनपुर अभियान के बाद छत्तीसगढ़ में मराठा आधिपत्य की स्थापना की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। रतनपुर के कलचुरि शासक रघुनाथ सिंह की सत्ता मराठा हस्तक्षेप के कारण कमजोर हो गई। इसके बाद नागपुर के भोंसले शासकों ने स्थानीय शासन व्यवस्था को अपने राजनीतिक हितों के अनुरूप संचालित करने का प्रयास किया। प्रारंभिक चरण में प्रत्यक्ष शासन लागू करने के बजाय स्थानीय शासक के माध्यम से प्रशासन चलाने की व्यवस्था अपनाई गई।

ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार, रघुनाथ सिंह के बाद मोहन सिंह को रतनपुर क्षेत्र का शासक बनाया गया। इस व्यवस्था में स्थानीय शासन की निरंतरता बनी रही, लेकिन वास्तविक राजनीतिक प्रभाव नागपुर के भोंसले शासकों के हाथों में केंद्रित होता गया। मराठों ने स्थानीय सत्ता को अपने अधीन रखकर राजस्व और प्रशासन पर नियंत्रण मजबूत किया। आगे चलकर बिम्बाजी भोंसले के समय छत्तीसगढ़ में प्रत्यक्ष मराठा शासन का प्रभाव अधिक स्पष्ट हुआ। इस प्रकार रतनपुर पर आधिपत्य की स्थापना ने छत्तीसगढ़ में मराठा राजनीतिक नियंत्रण के लिए आधार तैयार किया (Mishra, 1979; The Imperial Gazetteer of India, 1908)।

7. छत्तीसगढ़ में मराठा सत्ता की स्थापना एवं विस्तार

रतनपुर पर प्रारंभिक आधिपत्य स्थापित करने के बाद नागपुर के भोंसले शासकों ने छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी राजनीतिक एवं प्रशासनिक पकड़ मजबूत करने का प्रयास किया। इस प्रक्रिया में अप्रत्यक्ष शासन, स्थानीय शासकों पर नियंत्रण तथा बाद में प्रत्यक्ष प्रशासन की स्थापना जैसे चरण शामिल थे, जिनसे छत्तीसगढ़ में मराठा सत्ता का विस्तार हुआ।

7.1. रतनपुर में अप्रत्यक्ष शासन व्यवस्था

रतनपुर पर मराठा आधिपत्य स्थापित होने के बाद नागपुर के भोंसले शासकों ने प्रारंभिक चरण में

अप्रत्यक्ष शासन व्यवस्था अपनाई। इस व्यवस्था के अंतर्गत स्थानीय शासक को प्रशासनिक पद पर बनाए रखा गया, जबकि वास्तविक राजनीतिक नियंत्रण नागपुर दरबार के अधीन रहा। ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार, रघुनाथ सिंह के बाद मोहन सिंह को रतनपुर क्षेत्र का शासक नियुक्त किया गया। इस व्यवस्था का उद्देश्य स्थानीय प्रशासनिक परंपराओं को बनाए रखते हुए मराठा सत्ता को मजबूत करना था। स्थानीय शासक के माध्यम से शासन संचालित होने से मराठों को क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुरूप प्रशासन चलाने में सुविधा हुई। इसके साथ ही राजस्व संग्रह और राजनीतिक अधीनता पर भी नियंत्रण स्थापित किया गया। समय के साथ स्थानीय शासक की स्वतंत्रता सीमित होती गई और नागपुर के भोंसले शासकों का हस्तक्षेप बढ़ता गया। इस प्रकार अप्रत्यक्ष शासन व्यवस्था ने छत्तीसगढ़ में मराठा सत्ता के क्रमिक विस्तार का आधार तैयार किया (Mishra, 1979; The Imperial Gazetteer of India, 1908)।

7.2. रायपुर शाखा पर मराठा नियंत्रण

रतनपुर के अतिरिक्त रायपुर क्षेत्र भी मराठों की राजनीतिक गतिविधियों का महत्त्वपूर्ण केंद्र बना। मराठों के आगमन से पूर्व यहाँ कलचुरि वंश की स्थानीय शाखा का प्रभाव था। इस क्षेत्र में अमर सिंह और शिवराज सिंह जैसे स्थानीय शासकों का उल्लेख ऐतिहासिक विवरणों में मिलता है। नागपुर के भोंसले शासकों ने रायपुर क्षेत्र पर अपना प्रभाव स्थापित करने के लिए स्थानीय सत्ता व्यवस्था में हस्तक्षेप किया।

रायपुर पर नियंत्रण स्थापित करने की प्रक्रिया में स्थानीय शासकों की स्थिति धीरे-धीरे कमजोर हुई और मराठा राजनीतिक प्रभाव बढ़ता गया। उपलब्ध ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार, अमर सिंह की सत्ता समाप्त होने के बाद रायपुर क्षेत्र पर मराठों का नियंत्रण अधिक प्रत्यक्ष हुआ। इस परिवर्तन से नागपुर के भोंसले शासकों को छत्तीसगढ़ के मध्यवर्ती भाग में अपनी प्रशासनिक और राजस्व संबंधी स्थिति मजबूत करने का अवसर मिला। रतनपुर और रायपुर दोनों क्षेत्रों पर प्रभाव स्थापित होने से छत्तीसगढ़ में मराठा सत्ता का विस्तार अधिक संगठित हुआ (Mishra, 1979; The Imperial Gazetteer of India, 1908)।

7.3. बिम्बाजी भोंसले का प्रत्यक्ष शासन

छत्तीसगढ़ में मराठा सत्ता के विस्तार के इतिहास में बिम्बाजी भोंसले का शासन विशेष महत्त्व रखता है। प्रारंभिक दौर में स्थानीय शासकों के माध्यम से शासन संचालित करने के बाद नागपुर के भोंसले शासकों ने इस क्षेत्र में प्रत्यक्ष प्रशासन की दिशा में कदम बढ़ाए। बिम्बाजी भोंसले के शासनकाल में यह प्रक्रिया अधिक स्पष्ट हुई। उन्होंने छत्तीसगढ़ में नागपुर राज्य के अधिकार को सुदृढ़ करने तथा प्रशासनिक नियंत्रण को व्यवस्थित करने का प्रयास किया।

बिम्बाजी के शासन के दौरान राजस्व संग्रह, स्थानीय अधिकारियों की भूमिका और क्षेत्रीय प्रशासन पर मराठा प्रभाव बढ़ा। इससे छत्तीसगढ़ का राजनीतिक संबंध नागपुर के भोंसले राज्य के साथ अधिक मजबूत हुआ। स्थानीय शासकों और जमींदारों को मराठा सत्ता के अधीन रहकर अपने प्रशासनिक दायित्वों का निर्वहन करना पड़ा। बिम्बाजी भोंसले का शासन छत्तीसगढ़ में मराठा प्रभुत्व के सुदृढ़ीकरण का महत्त्वपूर्ण चरण था। इस काल में अप्रत्यक्ष नियंत्रण से आगे बढ़कर प्रत्यक्ष राजनीतिक एवं प्रशासनिक हस्तक्षेप की प्रवृत्ति विकसित हुई (Mishra, 1979; Gordon, 1993)।

8. छत्तीसगढ़ में मराठा प्रवेश का ऐतिहासिक विश्लेषण

छत्तीसगढ़ में मराठों का प्रवेश केवल एक सैन्य अभियान या राजनीतिक सत्ता परिवर्तन की घटना नहीं था, बल्कि इसने क्षेत्र की तत्कालीन राजनीतिक, प्रशासनिक और आर्थिक व्यवस्था को भी प्रभावित किया। इस संदर्भ में मराठा हस्तक्षेप के कारणों, उसके परिणामों तथा क्षेत्रीय इतिहास पर पड़े प्रभावों का ऐतिहासिक विश्लेषण करना आवश्यक है।

8.1. राजनीतिक एवं प्रशासनिक परिवर्तन

छत्तीसगढ़ में मराठों के प्रवेश से क्षेत्र की तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया। इससे पूर्व रतनपुर के कलचुरि शासकों तथा विभिन्न स्थानीय शासकों और सामंतों का प्रभाव विद्यमान था। वर्ष 1741 ई. के मराठा अभियान के बाद इस व्यवस्था में नागपुर के भोंसले शासकों का हस्तक्षेप बढ़ने लगा। प्रारंभ में स्थानीय शासकों के माध्यम से अप्रत्यक्ष शासन संचालित किया गया, लेकिन समय के साथ नागपुर दरबार का प्रशासनिक नियंत्रण अधिक मजबूत हुआ।

Sen (1925) ने बताया कि मराठा प्रशासन में अष्टप्रधान मंत्रिमंडल के माध्यम से शासन संचालित होता था। उन्होंने केंद्रीय एवं प्रांतीय प्रशासन, राजस्व संग्रह, वित्त प्रबंधन, सैन्य संगठन, न्यायिक व्यवस्था, ग्राम प्रशासन तथा पुलिस व्यवस्था की कार्यप्रणाली का वर्णन किया। उन्होंने शिवाजी और पेशवाओं के प्रशासनिक योगदान को भी स्पष्ट किया।

इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप स्थानीय शासकों की राजनीतिक स्वतंत्रता सीमित होने लगी और क्षेत्रीय प्रशासन मराठा सत्ता के अधीन आने लगा। राजस्व संग्रह, स्थानीय अधिकारियों की नियुक्ति तथा जमींदारों के साथ संबंधों में भी मराठा प्रभाव दिखाई देने लगा। इस प्रकार मराठा प्रवेश ने छत्तीसगढ़ की पारंपरिक सत्ता संरचना को प्रभावित करते हुए उसे नागपुर के भोंसले राज्य की व्यापक राजनीतिक व्यवस्था से जोड़ दिया (Mishra, 1979; The Imperial Gazetteer of India, 1908)।

8.2. आर्थिक एवं सामरिक महत्व

छत्तीसगढ़ में मराठा प्रवेश का आर्थिक और सामरिक महत्त्व भी उल्लेखनीय था। यह क्षेत्र कृषि उत्पादन, भूमि-राजस्व और स्थानीय व्यापार की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण था। नागपुर के भोंसले शासकों के लिए छत्तीसगढ़ पर नियंत्रण स्थापित करने से राजस्व प्राप्ति के नए अवसर उपलब्ध हुए। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था और स्थानीय व्यापारिक गतिविधियाँ राज्य की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक हो सकती थीं। इसलिए इस क्षेत्र पर राजनीतिक अधिकार स्थापित करना भोंसले शासकों के आर्थिक हितों से जुड़ा हुआ था।

सामरिक दृष्टि से छत्तीसगढ़ की स्थिति नागपुर और पूर्वी भारत के बीच संपर्क मार्गों के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण थी। इस क्षेत्र पर नियंत्रण से मराठों को मध्य भारत में अपनी राजनीतिक उपस्थिति मजबूत करने तथा आसपास के क्षेत्रों में प्रभाव बढ़ाने में सहायता मिली। इस प्रकार छत्तीसगढ़ मराठों के लिए केवल राजस्व प्राप्ति का क्षेत्र नहीं था, बल्कि उनके क्षेत्रीय विस्तार और सामरिक हितों की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण था (Gordon, 1993; Mishra, 1979)।

8.3. ऐतिहासिक महत्व एवं क्षेत्रीय प्रभाव

छत्तीसगढ़ में मराठों का प्रवेश अठारहवीं शताब्दी के क्षेत्रीय इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। इससे कलचुरि सत्ता का प्रभाव कमजोर हुआ और नागपुर के भोंसले शासकों का राजनीतिक नियंत्रण स्थापित होने लगा। स्थानीय शासकों, जमींदारों तथा प्रशासनिक व्यवस्थाओं पर इसका प्रभाव पड़ा। इस परिवर्तन ने छत्तीसगढ़ को मध्य भारत की व्यापक मराठा राजनीति से जोड़ दिया। आगे चलकर मराठा शासन का अंत और 1854 ई. में नागपुर के ब्रिटिश अधिग्रहण ने क्षेत्र के राजनीतिक इतिहास में एक नया चरण प्रारंभ किया। अतः मराठा प्रवेश को छत्तीसगढ़ के सत्ता परिवर्तन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है (Mishra, 1979)।

9. निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ में मराठा शक्ति का उदय एवं विस्तार अठारहवीं शताब्दी के क्षेत्रीय राजनीतिक इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया थी। मुगल सत्ता के कमजोर होने के साथ मराठों ने मध्य भारत में अपना प्रभाव बढ़ाया। इस विस्तार में नागपुर के भोंसले शासकों, विशेषकर रघुजी भोंसले प्रथम की भूमिका उल्लेखनीय रही। नागपुर को एक शक्तिशाली क्षेत्रीय सत्ता केंद्र के रूप में विकसित करने के बाद भोंसले शासकों ने छत्तीसगढ़ की ओर अपना राजनीतिक प्रभाव बढ़ाया।

मराठों के आगमन से पूर्व छत्तीसगढ़ में रतनपुर के कलचुरि शासकों तथा विभिन्न स्थानीय शासकों, जमींदारों और सामंतों का प्रभाव था। अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में राजनीतिक अस्थिरता और क्षेत्रीय सत्ता-संघर्षों ने मराठा हस्तक्षेप के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न कीं। वर्ष 1741 ई. में भास्कर पंत के नेतृत्व में रतनपुर अभियान इस दिशा में निर्णायक घटना सिद्ध हुआ। इसके परिणामस्वरूप कलचुरि सत्ता कमजोर हुई और नागपुर के भोंसले शासकों का प्रभाव स्थापित होने लगा।

मराठा सत्ता की स्थापना एक क्रमिक प्रक्रिया थी। प्रारंभ में स्थानीय शासकों के माध्यम से अप्रत्यक्ष शासन संचालित किया गया। इसके बाद रतनपुर और रायपुर सहित विभिन्न क्षेत्रों में मराठा नियंत्रण का विस्तार हुआ। बिम्बाजी भोंसले के शासनकाल में प्रत्यक्ष प्रशासनिक हस्तक्षेप अधिक स्पष्ट हुआ। इस प्रक्रिया ने छत्तीसगढ़ की पारंपरिक राजनीतिक व्यवस्था को नागपुर के भोंसले राज्य से जोड़ दिया।

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ में मराठा प्रवेश केवल सैन्य विजय नहीं था, बल्कि यह राजनीतिक सत्ता-संतुलन में परिवर्तन की व्यापक प्रक्रिया थी। इसके अंतर्गत स्थानीय शासकों की स्थिति, प्रशासनिक नियंत्रण और राजस्व व्यवस्था प्रभावित हुई। साथ ही छत्तीसगढ़ का मध्य भारत की मराठा राजनीति से संबंध अधिक सुदृढ़ हुआ। वर्ष 1854 ई. में नागपुर राज्य के ब्रिटिश अधिग्रहण के साथ इस राजनीतिक व्यवस्था का अंत हुआ। इस प्रकार 1741 से 1854 ई. तक का मराठा काल छत्तीसगढ़ के राजनीतिक एवं प्रशासनिक इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण संक्रमणकाल के रूप में देखा जा सकता है।

संदर्भ सूची

1] Gordon, S. (1993). The Marathas, 1600–1818. Cambridge University Press.

2] His Majesty's Secretary of State for India in Council. (1908). The imperial gazetteer of India: Vol. X, Central Provinces to Coompta. Clarendon Press.

3] Mishra, P. L. (1979). The political history of Chhattisgarh, 1740–1858 A.D. Vishwa Bharati Prakashan.

4] Sarkar, J. (1920). Shivaji and His Times. Longmans, Green and Co.

5] Sen, S. N. (1925). Administrative system of the Marathas: From original sources (2nd ed.). University of Calcutta.

6] Shukla, H. L. (1985). Social history of Chhattisgarh. Agam Kala Prakashan.

7] Ranade, M. G. (1900). The Rise of the Maratha Power. Punalekar & Co.

8] Duff, G. J. (1826). A History of the Mahrattas (Vols. 1–3). Longman, Rees, Orme, Brown, and Green.